शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

## मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी

KALE BICHCHHU (Hindi)

तख़रीज शुदा

# काले बिच्छू


मुर्दा निकालने के लिये क़ब्र खोदना कैसा ? 2

दाढ़ी मुंडवा कर तू ही गुलज़ारों में दाख़िल हुवा...! 3

मरने के बा'द की होशरुबा मन्ज़र कशी 4

दाढ़ी मुंडवाते ही मौत 9

दाढ़ी मुन्डों से आक़ा की नफ़रत का इब्रत नाक वाक़िआ 10


पेशकश : मजलिसे मक-त-बतुल मदीना


मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Ph:91-79-25391168 E-mail:maktabahind@gmail.com, www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

# किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ص۴۰دارالفکر بیروت)

**नोट :** अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

---

## काले बिच्छू

येह रिसाला **( काले बिच्छू )**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबित़ा :** मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
**मक-त-बतुल मदीना**
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदआबाद-1, गुजरात,
MO. 9374031409
E-mail : maktabahind@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

# काले बिच्छू

**शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला आप आख़िर तक पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ स़वाब व मा'लूमात का ढेरों ख़ज़ाना हाथ आएगा ।**

## *दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत*

**सरकारे** मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत **दुरूद शरीफ़** पढ़े होंगे ।'' (फ़िरदौसुल अख़्बार, जिल्द : 5, स-फ़ह़ा : 375, ह़दीस : 8210, दारुल किताबुल अ़रबी, बैरूत)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कहते हैं : कोइटा के एक क़रीबी गांव में किसी ''**क्लीन शेव**'' नौ जवान की ला वारिस लाश मिली । ज़रूरी कारवाई के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता है ।

बा'द लोगों ने मिलजुल कर उसे दफ़्ना दिया । इतने में मर्हूम के वु-रसा ढूंडते हुए आ पहुंचे और उन्हों ने लोगों के सामने अपनी इस ख़्वाहिश का इज़्हार किया कि हम अपने इस अ़ज़ीज़ की **क़ब्र** अपने गांव में बनाना चाहते हैं । चुनान्चे **क़ब्र** से मिट्टी खोद कर हटा दी गई और जब चेहरे की त़रफ़ से पथ्थर की सिल हटाई गई तो येह देख कर लोगों की चीख़ें निकल गईं कि अभी जिस नौ जवान को दफ़्न किया था उस के चेहरे पर काली दाढ़ी बनी हुई है और वोह दाढ़ी काले बालों की नहीं बल्कि **काले बिच्छूओं** की है। येह लर्ज़ा ख़ेज़ मन्ज़र देख कर लोग इस्तिग़्फ़ार पढ़ने लगे और जूं तूं क़ब्र बन्द कर के लौट गए ।

## मुर्दा निकालने के लिये क़ब्र खोदना कैसा ?

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** कोइटा वाले वाक़िए में लाश ले जाने के लिये क़ब्र खोदने का तज़्किरा है इस ज़िम्न में यहां येह ज़रूरी मस्अला ज़ेहन नशीन फ़रमा लीजिये, बिला इजाज़ते शर-ई क़ब्र खोदना **ह़राम** है मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, "नबश (क़ब्र खोदना) ह़राम, ह़राम, सख़्त ह़राम और मय्यित की अशद्द

तौहीन व हतके सिर्री रब्बुल आ़लमीन (या'नी अल्लाह तआ़ला के राज़ की तौहीन) है।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द : 9, स-फ़ह़ा : 405)

## *दाढ़ी मुंडवा कर जूं ही ग़ुस्ल ख़ाने में दाख़िल हुवा.....!*

एक बार सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ (राक़िमुल हुरूफ़) के सुन्नतों भरे बयान में मज़्कूरा वाक़ेआ़ सुन कर (बाबुल मदीना कराची) के एक नौ जवान ने ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब दाढ़ी सजा ली, मगर घर वाले मानेअ़ हुए और शादी के लालच में आ कर उसने भी दाढ़ी मुंडवा दी। मगर **काले बिच्छूओं** वाला वाक़ेआ़ उस के ज़ेहन से नहीं हटता था। जब शेव करवाने के बा'द वोह ग़ुस्ल ख़ाने में दाख़िल हुवा तो येह देख कर ख़ौफ़ से उस की घिग्घी बंध गई कि वहां एक ख़ौफ़नाक **काला कीड़ा** रैंग रहा है। येह देख कर उस ने उसी वक़्त दाढ़ी मुंडवाने से तौबा की और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दोबारा दाढ़ी बढ़ाना शुरूअ़ कर दी।

## दाढ़ियों को मुआ़फ़ी दो

**मह़ब्बते** रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दम भरने वालो! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने

आ़लीशान बार बार पढ़िये ।

"मूंछें ख़ूब पस्त (या'नी छोटी) करो और दाढ़ियों को मुआ़फ़ी दो (या'नी बढ़ाओ) यहूदियों की सी सूरत न बनाओ ।"

(शरहे़ मआ़निल आसा़र, लित्त़ह़ावी, जिल्द : 4, स़-फ़ह़ा : 28, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

## मरने के बा'द की होशरुबा मन्ज़र कशी

**ऐ ग़ाफ़िल** इस्लामी भाई ! ज़रा होश कर !! मरने के बा'द तेरी एक न चलेगी, **तेरे नाज़ उठाने वाले** तेरे कपड़े भी उतार लेंगे। तू कितना ही बड़ा सरमायादार सही, तुझे वोही **कोरे लट्ठे का कफ़न** पहनाएंगे जो फुटपाथ पर दम तोड़ देने वाले ला वारिस को पहनाया जाता है। तेरी कार है तो वोह भी गेरेज में खड़ी रह जाएगी। तेरे बेश क़ीमत लिबास सन्दूक़ में धरे रह जाएंगे। तेरा माल व मताअ़ और ख़ून पसीने की कमाई पर वु-रसा क़ाबिज़ हो जाएंगे। "**अपने**" अश्क बहा रहे होंगे। "**बेगाने**" ख़ुशियां मना रहे होंगे। तेरे नाज़ उठाने वाले तुझे अपने कन्धों पर लाद कर चल देंगे और एक ऐसे वीराने में ले आएंगे कि तू कभी इस हौलनाक सन्नाटे में ख़ुसूसन रात के वक़्त घड़ी भी तन्हा न आया

था, न आ सकता था बल्कि इस के तसव्वुर से ही कांप जाया करता था। अब गढ़ा खोद कर तुझे **मनों मिट्टी तले** दफ़्न कर के तेरे सारे अ़ज़ीज़ चले जाएंगे। तेरे पास एक रात कुजा एक घन्टा भी ठहरने के लिये कोई राज़ी न होगा। ख़्वाह तेरा **चहीता बेटा** ही क्यूं न हो, वोह भी भाग खड़ा होगा। अब इस तंगो तारीक **क़ब्र** में न जाने कितने हज़ार साल तेरा क़ियाम होगा। तू हैरानो परेशान होगा, अफ़्सुर्दगी छाई होगी, क़ब्र भींच रही होगी, तू चिल्ला रहा होगा, ह़सरत भरी निगाहों से अ़ज़ीज़ों को निगाहों से ओझल होता हुवा देख रहा होगा, दिल डूबता जा रहा होगा। इतने में **क़ब्र** की दीवारें हिलना शुरूअ़ होंगी और देखते ही देखते **दो ख़ौफ़नाक शक्लों वाले फ़िरिश्ते** (मुन्कर व नकीर) अपने लम्बे लम्बे दांतों से क़ब्र की दीवार को चीरते हुए तेरे सामने आ मौजूद होंगे, उन की आंखों से आग के शो'ले निकल रहे होंगे काले काले मुहीब (या'नी हैबतनाक) बाल सर से पांव तक लटक रहे होंगे, तुझे झिड़क कर बिठाएंगे। करख़्त (या'नी निहायत ही सख़्त) लहजे में इस त़रह़ सुवालात करेंगे : ''مَنْ رَّبُّكَ؟'' (या'नी तेरा रब عَزَّوَجَلَّ

कौन है ?) **"مَا دِيْنُكَ؟"** (या'नी तेरा दीन क्या है ?) इतने में तेरे और मदीने के दरमियान जितने पर्दे हाइल होंगे, सब उठा दिये जाएंगे किसी की मोहनी, दिलरुबा और प्यारी प्यारी सूरत सामने आ जाएगी। या वोह अज़ीम और प्यारी हस्ती खुद तशरीफ़ ले आएगी। क्या अजब ! तेरी आंखें शर्म से झुक जाएं। हो सकता है कि तू सोच में पड़ जाए कि निगाहें उठाऊं तो कैसे उठाऊं ! अपनी बिगड़ी हुई सूरत दिखाऊं तो कैसे दिखाऊं ! येह वोही तो **मेरे आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जिन का मैं कलिमा पढ़ा करता था। अपने आप को इन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का गुलाम भी कहता था। लेकिन मैं ने येह क्या किया ! मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तो येह फ़रमाया : **"दाढ़ी बढ़ाओ, मूंछे खूब पस्त करो और दाढ़ियों को मुआफ़ी दो यहूदियों जैसी सूरत मत बनाओ।"** लेकिन हाए मेरी बदबख़्ती ! मैं चन्द रोज़ा दुन्या की ज़ीनत में खो गया। फ़ैशन ने मेरा सत्यानाश कर दिया। आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सख़्ती से मन्अ़ करने के बा वुजूद मैं ने चेहरा यहूदियों या'नी म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दुश्मनों जैसा ही बनाया। हाए ! अब

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे।

क्या होगा ? कहीं ऐसा न हो कि मेरी बिगड़ी हुई शक्ल देख कर **सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुंह फेर लें और येह फ़रमा दें कि "**येह तो मेरे दुश्मनों वाला चेहरा है मेरे ग़ुलामों वाला नहीं !!**" अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता ऐसा हुवा तो सोच उस वक़्त तुझ पर क्या गुज़रेगी।

*न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम*

*अगर नबी ने नज़र से गिरा कर छोड़ दिया*

**ऐसा** नहीं होगा, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हरगिज़ नहीं होगा। अभी तू ज़िन्दा है, मान जा ! अपने कमज़ोर बदन पर तरस खा ! झट हिम्मत कर ! इंग्रेज़ी फ़ैशन, फ़िरंगी तेहज़ीब को तीन त़लाक़ें दे डाल और अपना चेहरा मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा **सुन्नत** से आरास्ता कर ले और **एक मुठ्ठी दाढ़ी** सजा ले। हरगिज़ हरगिज़ शैत़ान के इस फ़रेब में न आ और इन वसाविस की त़रफ़ तवज्जोह मत ला, कि "**अभी तो मैं इस क़ाबिल नहीं हुवा, मेरी तो उ़म्र ही क्या है ? मेरा इल्म भी इतना कहां है ? अगर किसी ने दीन के बारे में सुवाल कर दिया तो मुझे जवाब नहीं आएगा मैं तो जब**

**क़ाबिल हो जाऊंगा उस वक़्त दाढ़ी रखूंगा।''** याद रख ! येह शैत़ान का काम्याब तरीन वार है कि इन्सान अपने बारे में येह समझ बैठे कि **''हां, अब मैं क़ाबिल हो गया हूं।''** याद रखिये ! अपने आप को क़ाबिल समझना येही ना क़ाबिलिय्यत की सब से बड़ी दलील है। आ़जिज़ी इख़्तियार कर ! बड़े बड़े उ़-लमाए किराम भी हर सुवाल का जवाब नहीं देते तो क्या हर सुवाल का जवाब देने की तू ने ज़िम्मादारी ली हुई है ? नफ़्स की ह़ीला बाज़ियों में मत आ ! और मान जा। ख़्वाह मां रोके, बाप मन्अ़ करे, मुआ़शरा आड़े आए, शादी में रुकावट खड़ी हो। कुछ ही हो जाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे **रसूल** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म मानना ही पड़ेगा। **तसल्ली रख !** अगर जोड़ा लौह़े मह़फ़ूज़ पर लिखा हुवा है तो तेरी **शादी** ज़रूर हो जाएगी और अगर नहीं लिखा तो दुन्या की कोई त़ाक़त तेरी **शादी** नहीं करवा सकती। ज़िन्दगी का क्या भरोसा ?

## दाढ़ी मुंडाते ही मौत

**किसी** ने सगे मदीना (राक़िमुल हुरूफ़) को कुछ इस त़रह़ का वाक़ेआ़ सुनाया था कि **बंगलादेश** में एक नौ जवान

ने दाढ़ी रखी थी, जब उस की **शादी** का वक़्त क़रीब आया तो वालिदैन ने **दाढ़ी** मुंडवाने पर मजबूर किया। बा दिले न ख़्वास्ता नाई के पास जा कर **दाढ़ी** मुंडवा कर घर की त़रफ़ आते हुए सड़क उ़बूर कर रहा था कि किसी तेज़ रफ़्तार गाड़ी ने कुचल कर रख दिया, उस का दम निकल गया और उस की **शादी** के अरमान ख़ाक में मिल गए। मां बाप क्या काम आए ? न शादी हुई न दाढ़ी रही। तो **प्यारे इस्लामी भाई !** होश में आ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा कर के आज ही **अ़हद** कर ले कि अब ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत में गरदन तो कट सकती है मगर मेरी दाढ़ी अब दुन्या की कोई त़ाक़त मुझ से जुदा नहीं कर सकती। शाबाश.....मुबारक.....मुबारक.....मुबारक

## दाढ़ी मुंडों से आक़ा की नफ़रत का इ़ब्रतनाक वाक़ेआ़

**सगे** ईरान ख़ुस्रू (परवेज़) के पास ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल नामा मुबारका पहुंचा तो उस ज़ालिम व गुस्ताख़ ने मक्तूबे वाला को

देखते ही गुस्से से शहीद कर डाला और उस बद ज़बान ने बका : (.....परवेज़ का बे अदबाना जुम्ला नक़्ल करने की हिम्मत नहीं, लिहाज़ा हज़्फ़ किया जाता है.....) इस के बा'द सगे ईरान ख़ुस्रू (परवेज़) ने **बाज़ान** को जो **यमन** में इस का गवर्नर था और **अ़रब** का तमाम मुल्क उस के ज़ेरे इक़्तिदार समझा जाता था येह हुक्म भेजा कि.....(यहां पर भी सगे ईरान परवेज़ की बकवास ह़ज़्फ की जाती है) **बाज़ान** ने एक फ़ौजी दस्ता मामूर किया, जिस के अफ़्सर का नाम **ख़रख़सरा** था । नीज़ **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के असरो रुसूख़ पर गेहरी नज़र डालने के लिये एक मुल्की अफ़्सर भी उस के साथ किया जिस का नाम **बानूया** था । येह दोनों अफ़्सरान जिस वक़्त **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में पेश किये गए तो रो'बे नुबुव्वते मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वजह से उन की गरदन की रगें थरथरा रहीं थीं । **येह लोग चूंकि आतशपरस्त पारसी थे । इस लिये दाढ़ियां मुंडी हुई और मूंछें इस क़दर बढ़ी हुई थीं जिन से उन के लब ढके हुए थे** और अपने बादशाह परवेज़ को ''रब'' कहा करते थे । उन के चेहरे देख कर

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब तुम मुर्सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

**प्यारे आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तकलीफ़ पहुंची, कराहत के साथ फ़रमाया : "**तुम पर हलाकत हो** कि ऐसी सूरत बनाने का तुम से किस ने कहा है ?" उन्हों ने जवाब दिया : "हमारे रब परवेज़ ने।" **प्यारे आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**मगर मेरे रब तआ़ला ने तो मुझे येह हुक्म दिया है कि दाढ़ी बढ़ाऊं और मूंछें कतरवाऊं।**" (मदारिजुन्नुबुव्वत, जिल्द : 2, स–फ़ह़ा : 224,225, मर्कज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा, हिन्द, फ़तावा र–ज़विय्या, जिल्द : 22, स–फ़ह़ा : 647)

## क़ियामत का दिल हिला देने वाला मन्ज़र

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस वाक़िए पर ग़ौर फ़रमाइये ! समझ में न आया हो तो दोबारा पढ़िये ! खूब ग़ौर कीजिये ! दो[2] ऐसे अश्ख़ास जो अभी काफ़िर हैं मुसल्मान नहीं हुए। अह़कामे शरीअ़त से ना वाक़िफ़ भी हैं और मुकल्लफ़ भी नहीं। मगर चूंकि उन्हों ने फ़ित़री वज़्अ़ के साथ ज़ियादती की, चेहरे के कुदरती हुस्न को बरबाद किया। **सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़बीअ़ते मुबारका को उन का येह (या'नी दाढ़ी मुंडाने का) फ़े'ल इन्तिहाई ना गवार गुज़रा और बा

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर सौ रह़मतें भेजता है।

वुजूदे रह़मतुल्लिल आ़लमीन होने के फ़रमाया: **''तुम पर हलाकत हो।'' ज़रा सोचिये !** ग़ौर कीजिये ! जब मैदाने क़ियामत में सब जम्अ़ होंगे, नफ़्सी नफ़्सी का आ़लम होगा, मां बेटे से और बेटा बाप से भाग रहा होगा। उस वक़्त एक ही तो **ज़ाते पाक** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم होगी जो आ़सियों की उम्मीद गाह होगी। इसी **सरकारे नामदार** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में सब को ह़ाज़िरी देनी होगी। **याद रखिये ! जो जिस ह़ाल में मरेगा, उसी ह़ाल में क़ियामत के रोज़ उठाया जाएगा। दाढ़ी वाला, दाढ़ी के साथ उठेगा और दाढ़ी मुंडा, दाढ़ी मुंडा ही उठेगा।**

**ऐ मह़बूब** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **की सुन्नत को पामाल करने वालो !** अगर प्यारे सरकार शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप से इस्तिफ़्सार फ़रमा लिया : **''क्या तुम मुझ से मह़ब्बत करते रहे हो ?''** ज़ाहिर है इन्कार तो कर ही नहीं सकते, येही अ़र्ज़ करेंगे, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ही हमारे सब कुछ हैं, हम आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे।

अपने मां बाप, माल, औलाद सब से अ़ज़ीज़ तर समझते हैं। सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम तो दुन्या में झूम झूम कर अ़र्ज़ किया करते थे।

*मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रह़मते आ़लम !*
*मैं जी रहा हूं ज़माने में आप ही के लिये*

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमारी बेताबी का आ़लम तो येह था कि बे क़रार हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा करते थे।

*गुलामे मुस्तफ़ा बन कर मैं बिक जाऊं मदीने में*
*मुह़म्मद नाम पर सौदा सरे बाज़ार हो जाए !*

प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब मह़ब्बत कुछ ज़ियादा ही जोश मारती थी तो येह तक कह देते थे।

*जान भी मैं तो दे दूं ख़ुदा की क़सम !*
*कोई मांगे अगर मुस्तफ़ा के लिये !* صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

**येह** सब कुछ सुन कर (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ न करे) आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बिल्फ़र्ज़ येह इर्शाद फ़रमाएं : "ऐ मेरे गुलामो ! अगर वाक़ेई तुम मुझे मां, बाप और मालो औलाद सब से अ़ज़ीज़तर समझे थे और सिर्फ़ मेरी ही ख़ातिर दुन्या में ज़िन्दा

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

थे। नीज़ मेरे नाम पर बिकने बल्कि जान तक देने के लिये तैयार थे तो फिर **आख़िर क्या वजह थी कि शक्लो सूरत मेरे दुश्मनों जैसी बनाए फिरते थे ?** क्या तुम तक मेरे येह इर्शादात न पहुंचे थे : (1) "मूंछें खूब पस्त (या'नी छोटी) करो और दाढ़ियों को मुआ़फ़ी दो (या'नी इन को बढ़ने दो) और यहूदियों की सी सूरत मत बनाओ।" (शरहे मआ़निल आसार, लित्तहावी, जिल्द : 4, स-फ़हा : 28, दारुल कुतुबल इ़ल्मिय्या, बैरूत) (2) "जो मेरी सुन्नत इख़्तियार करे, वोह मेरा और जो मेरी सुन्नत से मुंह फेरे, वोह मेरा नहीं।" (कन्जुल उ़म्माल, जिल्द : 8, स-फ़हा : 116, रक़म : 22749, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत) (3) "जो मेरी सुन्नत पर अ़मल न करे, वोह मुझ से नहीं।" (सुनने इब्ने माजा, जिल्द : 2, स-फ़हा : 406, ह़दीस : 1846, दारुल मा'रेफ़ा, बैरूत)

## अगर आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए तो......!

**फ़ैशन पर मर मिटने वालो !** येह इर्शादाते आ़लिया याद दिलाने के बा'द अगर ख़ुदा नख़्वास्ता हमारे **प्यारे आक़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए तो आप क्या करेंगे ? किस के

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

दरवाज़े पर फ़रियाद करेंगे ? किस के दरवाज़े पर **शफ़ाअ़त** की भीक लेने जाएंगे ? कौन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब से बचाने वाला होगा ? अभी मौक़अ़ है, जब तक सांस बाक़ी है, वक़्त है, झटपट तौबा कर लीजिये, अपने चेहरे को **प्यारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की **मीठी मीठी सुन्नत** से आरास्ता कर लीजिये, अपने चेहरे पर **महब्बत की निशानी** सजा लीजिये। येह ख़ुश फ़हमी ख़त्म कर दीजिये कि अभी तो **उ़म्र** ही क्या है ? बा'द में रख लेंगे, शादी के बा'द देखी जाएगी ! **भोले भाले इस्लामी भाइयो !** शैत़ान के चक्कर में मत आइये ! वोह कैसे ही अ़ज़ीज़ की ज़बानी तुम्हें येह बावर करवाने की कोशिश करे कि अभी तुम्हारी उ़म्र **दाढ़ी** रखने जितनी नहीं हुई है, बा'द में रख लेना येह शैत़ान का बदतरीन काम्याब वार है। इस वार से इस मर्दूद ने न जाने कितनों को तबाह कर दिया। **आइये ! आप को एक इ़ब्रतनाक वाक़ेआ़ सुनाऊं।**

## *मरने से पहले शामत*

**एक** नौ जवान कमो बेश साल भर **''दा'वते इस्लामी''**

के सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल से वाबस्ता रहा और दाढ़ी भी सजा ली। फिर न जाने क्या सूझी ! शायद बुरे दोस्त मिल गए। مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ दाढ़ी साफ़ करवा दी। शबे जुमुआ़ बाबुल मदीना कराची के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ग़ैर ह़ाज़िर रहा। जुमुआ़ के रोज़ दोस्तों के साथ बाबुल मदीना (कराची) की मश्हूर तफ़रीह़ गाह "**हॉक्स बे**" के साह़िले समुन्दर पर पिकनिक मनाने के लिये चला गया। और **आह !** बेचारा डूब कर मौत का शिकार हो गया।

*मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे  मकीं हो गए ला मकां कैसे कैसे*
*हुए नामवर बे निशां कैसे कैसे  ज़मीं खा गई नौ जवां कैसे कैसे !*

*जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है*
*येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है*

## फ़ैशन परस्तों की स़ोह़बत तौबा तौबा !

**इस** मर्ह़ूम नौ जवान की उ़म्र तक़रीबन बीस[20] साल होगी। क्या उ़म्र थी ! शायद **दाढ़ी** रखने की अभी उ़म्र नहीं आई

थी ! कहीं इस लिये तो इन्तिक़ाल से सिर्फ़ पन्दरह[15] दिन पहले **दाढ़ी** साफ़ नहीं करवा दी थी ! नहीं हरगिज़ नहीं । बस बेचारे के नसीब ! बुरी सोह़बत का असर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! उस की मग़्फ़िरत करे । येह डूबने वाला नौ जवान हम सब को उभारने के लिये बहुत कुछ सामाने इ़ब्रत छोड़ गया ! जो कोई **दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल** से दूर होने का ख़याल करे या सैरो तफ़रीह़ के शाइक़ीन से दोस्ती का रिश्ता जोड़े, उसे चाहिये कि इस इ़ब्रतनाक वाक़िए़ पर अच्छी त़रह़ ग़ौर कर ले कि कहीं मैं भी दूसरों के लिये सामाने इ़ब्रत न बन जाऊं ! कहीं ऐसा न हो कि मेरे येह फ़ैशनपरस्त दोस्त ख़ुद तो डूबे हैं मुझे भी न ले डूबें ! और ग़ौर करे कि कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरी ज़िन्दगी के दिन पूरे होने को आ गए हों और इसी वजह से शैत़ान अपना पूरा ज़ोर मुझ पर लगा रहा हो, कहीं चन्द रोज़ की बुरी सोह़बत की नुहूसत के ज़रीए़ वोह मेरी पूरी ज़िन्दगी की कमाई पर पानी न फेर दे । बे नमाज़ियों और फ़ासिक़ों की सोह़बतों में बैठने वालो ! ख़बरदार !!!

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

पारह 7 सूरतुल अन्आ़म आयत नम्बर 68 में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۸﴾
(پ : ۷، الانعام، آیت : ۶۸)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:** और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

## दाढ़ी सिर्फ़ मुस्तफ़ा की पसन्द की रखो

**ऐ म-दनी मह़बूब** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **के चाहने वालो !** मान जाओ ! अपनी जवानी पर मत इतराओ ! दुन्यवी मजबूरियों को ह़ीला मत बनाओ ! आओ ! आओ ! रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दामने करम से लिपट जाओ ! इन के परवर्द गार रब्बे ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ से भी मग़्फ़िरत की भीक त़लब कर लो। इन से भी मुआ़फ़ी मांग लो। येह बारगाह करम वाली बारगाह है। यहां से कोई साइल मायूस नहीं जाता। सुन्नत की ख़ैरात ले लो। अपने चेहरे से दुश्मने ख़ुदा व मुस्त़फ़ा की नुहूसत को हमेशा हमेशा के लिये धो डालो

और प्यारी प्यारी सुन्नत चेहरे पर सजा लो । और हां ! ख़याल रखना ! शैत़ान बड़ा मक्कार व अ़य्यार है, कि आप इंग्रेज़ों और यहूदियों से तो दामन छुड़ा लें और **दाढ़ी** भी सजा लें, मगर शैत़ान दूसरे ज़ाविये से फिर घेर ले और आप को कहीं फ़्रान्सीसियों के क़दमों में न पटख़ दे । मत़लब येह कि कहीं **''फ्रेंन्च कट''** या'नी **ख़शख़शी दाढ़ी न रख लेना कि दाढ़ी मुंडवाना और कतरवा कर एक मुठ्ठी से छोटी कर देना दोनों ही ह़राम है । दाढ़ी रखिये और ज़रूर रखिये । मगर मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **की पसन्द की रखिये या'नी एक मुठ्ठी पूरी रखिये ।**

## *दाढ़ी छोटी कर डालना किसी के नज़्दीक ह़लाल नहीं*

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द : 22, सफ़ह़ा : 652 पर ''दुर्रे मुख़्तार'', ''फ़त्हुल क़दीर'', ''अल बह़रुर्राइक़'' वग़ैरा मो'तबर कुतुबे फ़िक़्ह के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं कि ''जब तक दाढ़ी एक मुठ्ठी से कम है इस में से कुछ लेना जिस त़रह़ कि

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे।

बा'ज़ मग़रिबी मुख़न्नस करते हैं येह किसी के नज़्दीक ह़लाल नहीं। और सब ले लेना (या'नी बिल्कुल ही मुंडवा देना) आतश परस्तों, यहूदियों, हिन्दूओं और बा'ज़ फ़िरंगियों (या'नी अंग्रेज़ों) का फ़े'ल है।" (गुन्निया ज़विल अह़काम अल जुज़ अल अव्वल, स-फ़ह़ा : 208, बाबुल मदीना कराची, अल बह़रुर्राइक़, जिल्द : 2, स-फ़ह़ा : 490, कोइट्टा, फ़त्हुल क़दीर, जिल्द : 2, स-फ़ह़ा : 270, कोइट्टा)

## दाढ़ियां कतरवाने वाले बद नसीब

**दाढ़ी** को छोटी करवा देने वाले बल्कि साफ़ करवा देने वाले लोग फ़ुक़्हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام के मज़्कूरा इर्शाद से इ़ब्रत ह़ासिल करें। बल्कि इ़ब्रत बालाए इ़ब्रत तो येह है, जैसा कि **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामीए सुन्नत, माह़ीए बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ पर कस्रत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है।

ने रिसाला, "**लम्अ़तुद्दुहा**" में ह़ज़रते सय्यिदुना कअ़्बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ वग़ैरा का क़ौल नक़्ल किया है : "आख़िर ज़माने में कुछ लोग होंगे कि दाढ़ियां कतरेंगे, वोह निरे बे नसीब हैं। या'नी उन के लिये दीन में ह़िस्सा नहीं, आख़िरत में बहरह (या'नी ह़िस्सा) नहीं।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द : 22, स-फ़ह़ा : 651) देखा आपने ? गोया दाढ़ी को कतरवा कर एक मुठ्ठी से कम करने देने वाले दीनो दुन्या और आख़िरत में बद नसीब हैं।

*सरकार का आ़शिक़ भी क्या दाढ़ी मुंडाता है !*

*क्यूं इ़श्क़ का चेहरे से इज़्हार नहीं होता*

## म-दनी इल्तिजाएं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ عَلٰى اِحْسَانِهٖ ! जिन को तौफ़ीक़ मिली, उन्हों ने अपना चेहरा दुश्मनाने मुस्त़फ़ा की नुहूसत से पाक कर के **सुन्नत** सजा ली। अब उन्हें चाहिये कि चूंकि आज तक **दाढ़ी** मुंडाते रहे हैं लिहाज़ा उस की तौबा भी कर लें और साथ ही साथ येह भी कोशिश करें कि अपने सर के बाल इंग्रेज़ी वज़्अ़ के न रखें, बल्कि **सुन्नत** के मुत़ाबिक़ **ज़ुल्फ़ें** बढ़ाएं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआ़ला उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है।

सर पर हर वक़्त **इमामा शरीफ़** का ताज सजाएं कि हमेशा हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सरे मुनव्वर पर टोपी शरीफ़ के ऊपर इमामए पाक सजाएं रखा। इमामा शरीफ़ सुन्नते लाज़िमा दाइमा मुतवातिरा है। **मदीने के ताजदार** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **"इमामा बांधो तुम्हारा ह़िल्म बढ़ेगा।"** (या'नी कुव्वते बुर्दबारी में इज़ाफ़ा होगा) (अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम, जिल्द : 5, स-फ़ह़ा : 272, ह़दीस : 7488, दारुल मा'रेफ़ा बैरूत) एक और जगह इर्शाद फ़रमाया: رَكْعَتَانِ بِعِمَامَةٍ خَيْرٌ مِّنْ سَبْعِيْنَ رَكْعَةً بِلَا عِمَامَةٍ "या'नी **इमामे के साथ दो रक्अ़त नमाज़ बे इमामे की सत्तर रक्अ़तों से अफ़्ज़ल हैं।"** (अल जामेउ़स्सग़ीर, लिस्सुयूत़ी, स-फ़ह़ा : 273, ह़दीस : 4468, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत) नीज़ **लिबास भी सफ़ेद** और हर क़िस्म की फ़ेन्सी तराश ख़राश से मुनज़्ज़ा और बिल्कुल सादा ज़ेबे तन फ़रमाइये और इंग्रेज़ी लिबास से परहेज़ कीजिये। रोज़ाना पांचों नमाज़ें तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा कीजिये। बेजा हंसी मज़ाक़ और फ़ुज़ूल गोई की आ़दत तर्क कर दीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **बा वक़ार मुसल्मान** बन कर मुआ़शरे में

उभरेंगे । जहां कहीं "**दा'वते इस्लामी**" के सुन्नतों भरे **इज्तिमाआ़त**[1] मुयस्सर आएं ज़रूर शिर्कत फ़रमाएं । ज़िन्दगी को बा अ़मल बनाने के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करें और हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाएं । तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िले** शहर ब शहर और गांव ब गांव सफ़र करते रहते हैं। इन के साथ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **ज़रूर ज़रूर ज़रूर** सफ़र इख़्तियार करें और अपनी **आख़िरत** बेहतर बनाएं।

**या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें फ़राइज़ के साथ साथ **दाढ़ी मुबारक, ज़ुल्फ़ों और इमामा शरीफ़** वग़ैरा सुन्नतें इस्तिक़ामत के साथ अपनाने की सआ़दत बख़्श और हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

1. अह़मदआबाद में दा'वते इस्लामी का हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ हर जुमा'रात को बा'द नमाज़े इ़शा फ़ैज़ाने मदीना मिरज़ापूर में होता है।